सर्प का जीवन दर्शन

जगत में कौन प्राणी अन्य काया कल्प कर सकता।
मात्र मुख बिन्दुओं से अन्य जीवन अल्प कर सकता
अपद होकर सकल जग में अप्रतिहत गति विचरता हो
वयस के साथ विक्रम वीर्य जिसका नित निखरता हो । 1 ।

जिसे मरूभूमि वन शाद्वल अगम भी नहीं हैं भूधर
जगत में उरग के अतिरिक्त ऐसा कौन है भूचर
असंख्यक विक्रमी मतिमान श्री युत विश्व की निधि में
गरल के अस्त्र का वरदान बस हमको दिया विधि ने । 2 ।

निरापद आत्म को रिपु हेतु घातक यह अलक्षित है
सदा उपलब्ध अक्षय गूढ तर वपु मध्य रक्षित है
नहीं यह हार्य पर को मांगना पड़ता नहीं पर से
सहज उपलब्ध सन्तति को न पड़ ता बांटना कर से । 3 ।

विजय साधन सकल भय स्त्रोत निज को भी निरापद है
उरग मत मान्य चिर अनुभूत लघु आयास फलप्रद है
सहज सम्पत्ति है वपु गूढ उपयोगी सरल तम है
अतः पीयूष भी है त्याज्य प्रिय मुझको गरल मम है । 4 ।

अमोघा युध परम घातक नहीं परित्राण इससे है
सफल प्रतिकार विष का इस धरा पर मात्र विष से है

अविष मम बन्धु जो उनमें निगीर्णन की परम क्षमता
जकड़ लेते बली को भी न उनके धैर्य की क्षमता । 5 ।

इतर को जीभ का उपयोग हम करने नहीं देते
मिलीं दो जीभ हमको कुशलता से काम हैं लेते
दिखाने को हमारे पास भी बस एक ही मुख है
हजारों मुखों से समवेत भाषण का हमें सुख है । 6 ।

श्रवण से हीन होते अन्य जब कुछ बात रखता है
तर्क में जब कभी आधार ही लगता खिसकता है
त्वरित हम कोप के आवेग से फुफकार है उठते
समय लगता न सर्पों के सघन समुदाय को जुटते । 7 ।

जगत दे मान्यता अतएव मणि भी धारतेहैं हम
उसी आलोक में निज बन्धु को भी मारते हैं हम
न बाधा सह्य हमको काम्य बस राज की सत्ता
जहां से उद्गमित होते सकल सुख और गुणवत्ता । 8 ।

पलक हैं ही नहीं अतएव क्या पलकें झुकाना है
सदा रज पूर्ण मन वपु शुद्धि क्या फिर क्या नहाना है
न गति है कुटिलता के बिना वह इस हेतु स्वीकृत है
गरल गुणधर्म ही है प्राण हरना कहाँ दुष्कृत है । 9 ।

त्वचा तक त्याग देते कठिन क्या निष्ठा बदलना है
सदा भूतल स्पर्शी। हेतु क्या जग में फिसलना है
त्वचा द्युति मात्र परिमित ही हमें श्रीबोध मिलता है

निगीर्णन निधि निशा रति से हमारा चित्त खिलता है । 10 ।

पिलाया दूध जिस ने भी किया सत्वर उसे दंशित
किये बस कनक द्युति ने ही हमारे नेत्र आकर्षित
हुए हर्षित कृतघ्नी की मिली जब जब मिली पदवी
उपेक्ष्या लोक निन्दा जीतना है यदि तुम्हें पृथिवी । 11 ।

स्व सन्तति में बड़े आयास से हम बढाते विष हैं
करें रिपुघात ये ही प्रार्थना ऐं और आशिष हैं
नहीं दायित्व सन्तति प्रति हमारा और कोई है
सदा हम भोग युत हैं कामना प्रबला न सोयी है । 12 ।

वयस के साथ बढती है निरन्तर क्रूरता कटुता
मनीषा प्रखर होती बृद्धि पाती उपधि छल पटुता
विकलता कोप बढते गरल जब आकण्ठ भरता है
परम सन्तोष होता अन्य जब अपमृत्यु मरता है । 13 ।

सदा रहता हमें अपनी अपदता का महादुख है
हमारी मान्यता है मात्र सत्ता ही परम सुख है
अतःतत्प्राप्ति संकेन्द्रित हमारे यत्न हैं सारे
अरे इस हेतु परिजन तक युगों से हमी ने मारे । 14 ।

अन्य को पाप जो मेरे लिए वह पुण्य बन जाता
नही मम जाति में है निन्द्य जो निज बन्धु भी खाता
मात्र बल मान्य मेरे वर्ग में जय घोष है प्यारा
निखिल धन मान जीवन आशु खोता शत्रु मम हारा । 15 ।

मात्र हम भोग हित अधिकृत रहें सब क्षुद्र जन अर्जक
लगाएं बुद्धि पैनी मानसिक व्यायाम प्रिय सर्जक
बनालें भव्य भवनों को बसेंगे अन्ततः पन्नग
हमारी शिरोमणि यों से जगत होगा कभी जगमग । 16 ।

सदा परसंपदा कोआत्म की ही मानते हैं हम
सकल संसार के साधन हमारे भोग हित हैं कम
सकल वनिता धरा कीं भोग्य विक्रम जेय धरणी है
विजित जन दास मेरे वस्तु वत ही रम्य रमणी है । 17 ।

सतत यात्रा विकट अभियान आयुध अश्व आस्कंदन
छलावा क्रूरता हिंसा हुताशन लूट पुर भंजन
दुखी दासत्व की आहें प्रशोषण दर्प दावानल
विविध आमिष कनक कान्ता यही बस सर्प का जीवन । 18 ।

सदा रहता परम शंकित जगत को देखता अपलक
इतर सब भासते है रिपु भरे षडयंत्र से मस्तक
निखिल जीवन हमारेलिए प्रचलित अनवरत है रण
अतः हम ढूंढते रहते विजय के मार्ग रति के क्षण । 19 ।

करें क्यों अन्य जन शासन मही जब वीर भोग्या है
नहीं इस लोक की संपत्ति पामर जन प्रयोज्या है
रहें बिल में विकल विषधर करो तुम स्वैर हो विचरण
नहीं अब सह्य है यह अन्य कृत समृद्धि धन प्रसरण । 20 ।

अरे कब काम आएगा गरल यह विषम चिर संचित
बचे हम नाम के भोगी हुए बहु भोग से वंचित
वमित होगा हमारा विष परम संन्तप्त होगा भव
रचेंगे अहि नवल इतिहास अरि का पूर्ण कर परिभव । 21 ।

सर्व सुख स्त्रोत होगी उस नवल युग में परम सत्ता
गुणाकर हेम निधि होगी सुमान्या मात्र बलवत्ता
उपधि का नित निवारण योग्यता ही पात्रता होगी
न आसन पर टिकेगा भीरु निर्बल सौम्य ऋजु रोगी । 22 ।

रमण की वस्तु बन कर ही रहेंगी फिर सभी रमणीं
सुरक्षित रह सकेगी नहीं वन में बृद्ध भी श्रमणी
विवर्धन वंश का होगा परम कर्तव्य गृहिणी का
हमारे सौध में होगा भरा मणिकोष धरणी का । 23 ।

मिलेगा सुख कनकचय पर हमें आसीन होने का
मिटेगा खेद मन से घिसटने का दीन होने का
करेंगे दासता विस्तार पुर गण खंडहर करके
चखेंगे भोग मनमाने असंख्यक दासियां हरके । 24 ।

शस्त्र ही स्त्रोत सारे सुखों का मेरे जगत में है
अम्लता सदा ले जाती यहां जन को विगत में है
न कुछ विज्ञान से नाता न हम बहु शास्त्र पढते हैं
नवल इतिहास असिस्टेंट की तूलिका से सर्प गढते हैं । 25 ।

सुत्याज्या तर्कणा है बस तुम्हें विश्वास धरना है

मात्र सत्ता र्थ तुमको यहां जीना और मरना है
भले दें भुवन को अति भव्यता ये इतर जन श्रम से
करेंगे सर्प ही अधिकार इस पर गरल विक्रम से । 26 ।

किंतु हम हैं विवश बस वक्रता में हमारी गति है
हमारे लाभ की जननी सदा ही अन्य की क्षति है
न नर्मिति में रही रुचि ग्राह्य बल से अन्य की कृति है
हमारे लिए निर्धारित क्षयावह तापमय सृति है । 27 ।

निराशा कभीहोती है न लगती सरल कुछ जय है
यहां इस देश में जन को गरल का नहीं कुछ भय है
यहां भूषण बना लेते उरग को देव ऐसे हैं
उसे शय्या बना लेते अरे निश्चिन्त कैसे हैं । 28 ।

उरग को रज्जु वत करके किया हैउदधि का मन्थन
निकाले रत्न अद्भुत मानती प्रज्ञा न कुछ बन्धन
हलाहल कण्ठ में भी धार सकते तथ्य अद्भुत है
पराक्रम आर्य जन का आदि से ही लोक विश्रुत है । 29 ।

शिव कुमार मिश्र

भोपाल

28.08.2022